शिक्षा एवं समाज की उन्नति के लिए समर्पित

द्विभाषीय मासिक समाचार पत्र

शिक्षा ईशारा

SHIKSHA ISHARA

R.N.I. No. DELBIL/2014/60339

Email : shikshaishara@gmail.com

विद्या बिना मति गई।
मति बिना नीति गई।
नीति बिना गति गई।
गति बिना वित्त गया।।
वित्त बिना।
लाचारी गरीबी आई।
एक विद्या बिना हुए।

-जोतिराव फुले

◆ वर्ष : 8 ◆ अंक : 12 ◆ दिसम्बर 2023 ◆ मासिक ◆ नई दिल्ली ◆ पृष्ठ : 04 ◆ मूल्य : 5 रुपये

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान की स्थापना कांस्टीट्यूशन क्लब दिल्ली में 26 मार्च 2011 के अवसर पर

भोपाल में महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के फोल्डर का विमोचन

11 अप्रैल 2015 को महात्मा फुले जयंती के अवसर पर जयपुर में माल्यार्पण

शिक्षा दान की अभिनव योजना का प्रथम चरण प्रारम्भ

नई दिल्ली। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान की स्थापना राजधानी दिल्ली से 2011 में हुई जिसका प्रमुख उद्देश्य समाज के विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में अभियान जारी रखना है। गुरुकुल व अन्य प्रोजेक्ट के लिए भूमि चयन करने के लिए समिति ने प्रयास किया। तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात में कई जगह भूमि का समिति ने अवलोकन किया। अंततः राजस्थान में शासन से भूमि लेने का निश्चय किया। पहल जारी है।

प्रथम चरण में समाज के यूपीएससी करने वाले विद्यार्थियों को छात्रावास की सुविधा उपलब्ध कराने का निश्चय किया। समाज के भामाशाह गंगाराम गहलोत, रामलाल कच्छावा, शंकर राव लिंगे द्वारा 27 कमरों का मुखर्जी नगर में छात्रावास क्रय कर लिया गया है। जो यूपीएससी हब मुखर्जी नगर में है। संस्थान की शिक्षा दान की अभिनव योजना का प्रथम चरण प्रारंभ हो चुका है। विभिन्न प्रदेशों के समाज के भारतीय प्रशासनिक सेवा की कोचिंग करने वाले विद्यार्थी इसका लाभ उठा रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा में समाज के स्टूडेंट्स को परीक्षा उत्तीर्ण कराने के लिए प्रयास जारी है।

संस्थान की आमसभा 21 जनवरी को राजस्थान पाली जिले की बाली तहसील में सादड़ी गांव में आयोजित की गई है, जिसमें विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श कर निर्णय लिए जाएंगे। संस्थान के पदाधिकारी, आजीवन सदस्यों को आमंत्रित करने के लिए 25 दिसंबर को नोटिस जारी कर दिया गया है। आने वाले प्रतिनिधियों के लिए ठहरने एवं भोजन की व्यवस्था 20 एवं 21 जनवरी के लिए की गई है।

प्रतिनिधियों को भाग लेने की सूचना राष्ट्रीय अध्यक्ष गंगाराम गहलोत, महासचिव रामनारायण चौहान को देने का निवेदन है जिससे कि सत्कार की समुचित व्यवस्था आसानी से की जा सके। किसी प्रतिनिधि को असुविधा न होने पाए। सादड़ी आमसभा सम्मेलन में आमंत्रित हैं।

सादड़ी गांव के आस-पास के दर्शनीय स्थल

रणकपुर गुलाबी मार्बल का बना जैन मंदिर 4 किलोमीटर, चारभुजा नाथ मंदिर 40 किलोमीटर, जवाई लेपर्ड चीता जंगल 40 किलोमीटर, कुंभलगढ़ 50 किलोमीटर, उदयपुर 80 किलोमीटर, माउंट आबू 150 किलोमीटर। सादड़ी आमसभा में भाग लेने के लिए दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करने के लिए भी अपना प्रोग्राम बना सकते हैं। फालना रेलवे जंक्शन से 20 किलोमीटर सादड़ी है। यहां स्टेशन से लाने की व्यवस्था की जा रही है। उदयपुर एयरपोर्ट से 80 किलोमीटर है। वहां से टैक्सी द्वारा सादड़ी आसानी से आ सकते हैं।

20 एवं 21 जनवरी को रहने खाने की व्यवस्था की जा रही है। आपसे अपेक्षा है कि दिनांक 10 जनवरी तक आपके एवम साथ में और आने वालों की सूची भी इस व्हाट्सएप पर अथवा राष्ट्रीय अध्यक्ष गंगाराम गहलोत जी के मोबाइल नंबर 9825005723 पर देने की कृपा करें। आपकी सुविधा के लिए व्यवस्थाएं की जानी है। इसलिए 10 जनवरी तक अवश्य अवगत कराने की कृपा करें।

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के पदाधिकारी

गंगाराम गहलोत
राष्ट्रीय अध्यक्ष (गुजरात)

शंकरराव लिंगे
पूर्व अध्यक्ष (महाराष्ट्र)

श्रीपाल सैनी
उपाध्यक्ष (दिल्ली)

शशि सैनी
उपाध्यक्ष (हरियाणा)

एन.एल. नरेन्द्र बाबू
उपाध्यक्ष (कर्नाटक)

रामनारायण चौहान
महासचिव (मध्य प्रदेश)

रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष (राजस्थान)

एडवोकेट अनुभव चंदेल
संयुक्त सचिव (राजस्थान)

ग्यारसी लाल सैनी
सचिव (दिल्ली)

एस.बी. सैनी
सदस्य (उत्तर प्रदेश)

संजय मालाकार
सदस्य (बिहार)

हरीश पटेल
सदस्य (छत्तीसगढ़)

सम्पादकीय

मासिक समाचार पत्र 'शिक्षा ईशारा' एक माध्यम

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान द्वारा निश्चय किया गया कि एक मासिक समाचार पत्र संस्थान की ओर से प्रकाशित किया जाए जो कोरोना काल में अवरोध के कारण संभव नहीं हो पाया। अब यह अंक आपके हाथ में है। संस्थान का उद्देश्य है कि शैक्षणिक क्रांति के लिए जो अभियान महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा चलाया गया था और उनके अथक प्रयासों से उनकी पत्नी सावित्रीबाई फूल को उन्होंने शिक्षित किया, प्रशिक्षित किया और भारत की प्रथम नई शिक्षिका बनाकर नारी शिक्षा के सोपान खोल दिए। जिस वर्ण को शिक्षा पाने का अधिकार ही नहीं था, उस वर्ण के लोगों को भी शिक्षित होने के लिए उनके अवसर फुले दंपत्ति ने प्रारम्भ कर दिया। यह अनुकरणीय है। देश के लाखों करोड़ों लोग जिन्हें शिक्षा पाने का तो छोड़ो, वेद पुराणों की बातें सुनना भी शास्त्रों की बात सुनना भी संभव नहीं था। उस युग में यदि कोई व्यक्ति इस वर्ण का शास्त्र की बात कानों में भी सुन लेता था तो उसके कानों में शीशा पिघलाकर दंडित किया जाता था। यानी शास्त्रों की बात पढ़ना तो बहुत दूर सुनना भी संभव नहीं था। ऐसे युग में फूले दंपति ने कठोर संघर्ष करते हुए इस वर्ण के लोगों के साथ ही नारी शिक्षा का सोपान प्रारंभ कर दिया। उनके आदर्शों को बढ़ाने के लिए संविधान रचयिता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने तो शिक्षा के लिए क्रांति को आगे बढ़ाने में अपना जीवन खपाया जिसका परिणाम है कि अब इस वर्ण के साथ ही महिलाएं भी अब छोटे–छोटे पदों से लेकर बड़े–बड़े पदों तक की सेवा में भी अपनी सेवाएं देकर देश का गौरव बढ़ा रही हैं। राजनीति के क्षेत्र में भी गांव की पंचायत से लेकर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री जैसे पदों तक पहुंचने में भी महिलाएं सफल हो चुकी हैं। इन सबका यदि श्रेय देखा जाए तो केवल और केवल फुले दंपत्ति को ही है। यदि फुले दंपत्ति भारत में नहीं होते तो भारत की महिलाएं नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर थीं। फूले दंपत्ति ने शोषित पीड़ित वर्ग के जो लोग शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते थे, आज समाज में सीना तानकर बराबरी से समता मूलक सभी अधिकार जो प्रकृति द्वारा प्रदत्त है पाने के लिए पूरा–पूरा अवसर उन्हें मिल रहा है। यह एक ऐसी क्रांति है जो सभी क्रांतियों से बढ़कर है। फूले दंपत्ति के आदर्शों को लेकर ही महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान की स्थापना हुई है और वर्ष 2011 से लेकर निरंतर इस दिशा में पहल जारी है। अभी दिल्ली में यूपीएससी करने के लिए समाज के विद्यार्थियों के लिए छात्रावास 5 करोड़ में क्रय कर लिया है जहां 27 कमरों में विद्यार्थीगण भारतीय प्रशासनिक सेवा पाने के लिए निरंतर जुटे हुए हैं। शिक्षा ईशारा इस अभियान में पूरा–पूरा सहयोगी है। सावित्रीबाई फुले की जयंती 3 जनवरी को मनाने के बाद अब 10 मार्च को उनकी पुण्यतिथि का आयोजन हो रहा है और इसी तरह सामाजिक शैक्षणिक क्रांति के जनक महात्मा ज्योतिबा फुले जी की जयंती का भी 11 अप्रैल 2024 को देशभर ही नहीं विश्व भर में आयोजन होने की श्रृंखला आगे बढ़ रही है। हम फुले दंपत्ति के उपकार को कभी भुला नहीं सकते।

जय ज्योति जय क्रांति

रामनारायण चौहान
संपादक

युगपुरुष महात्मा ज्योतिबा फुले

महात्मा ज्योतिबा फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 को पुणे में हुआ। फुले ने सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर समाज उत्थान के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया। इसी के साथ नारी शिक्षा का सोपान प्रारंभ करने के लिए सर्वप्रथम अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को शिक्षित, प्रशिक्षित कर भारत की प्रथम शिक्षिका बनाया।

नारी जगत को शिक्षित होने और समाज में बराबरी से जीने का अधिकार दिलाने के लिए फुले दंपत्ति का महान योगदान इस देश के नागरिक कभी भुला नहीं सकते।

पुस्तक लिखते–लिखते 28 नवंबर 1890 को ज्योतिबा फुले का प्लेग की बीमारी के कारण परिनिर्वाण हुआ।

सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों के लिए सजग हों

रामनारायण चौहान
महासचिव,
महात्मा फुले सामाजिक
शिक्षण संस्थान, दिल्ली

हम निरंतर समाज उत्थान तथा शिक्षा के साथ ही आर्थिक और राजनीतिक विमर्श भी करते रहे हैं। इससे कुछ जागरूकता भी आने के संकेत धीरे–धीरे मिलने लगे हैं। यह सुखद है। हमें यह समझना पड़ेगा कि हमारा जीवन किन–किन उद्देश्यों के लिए बना है। हम किस प्रकार के व्यवहार, आचरण, कामकाज करके अपने जीवन को 'दाल रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ' से आगे बढ़ने ही नहीं दे पा रहे। यह तो स्वयं सिद्ध है कि दाल रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ तो इंसान के अलावा बाकी प्राणी भी यही करते हैं। फिर इंसान और उनमें क्या अंतर है? वह संतुष्ट होकर इंसान क्या कर रहा है? या करने की सोच रहा है? अपनी कोई तमन्ना भी है? अगर यह तमन्ना और चिंतन हो कि हमने इस धरती पर जन्म लेकर अपने अलावा औरों के लिए भी कुछ करने का काम करना चाहिए उन्हें सजग करके सक्षम बनाने के लिए जो संभव हो प्रयास करना चाहिए। इन्हीं सब चिंतन से सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों को पाने लायक बन सकते हैं। इन्हीं विचारों का विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं।

प्रत्येक मनुष्य समाज में जन्म से लेकर मृत्यु तक और तथाकथित आधारों के आधार पर मृत्यु पर्यंत तक भी लूट खसोट का शिकार बना रहता है। सामाजिक परंपराएं निरंतर चल रही है। समाज में बहुत कम लोग ही यह समझ पाए हैं कि इस प्रकार के दुख की चोट से कब उबर पाएंगे। चिंतन करना होगा। समाज में व्याप्त कुरीतियां जिनके माध्यम से दलाली का कारोबार बहुत अच्छे ढंग से चलता है। ऐसी कुरीतियों को त्यागना होगा। उदाहरण के रूप में वर्णवादी व्यवस्था में कुरीतियां इंसान को गुलाम बनाकर रखती है। और गुलामी की आदत परंपरागत भी चलती रहती है। इन आदतों में सुधार करना ही समाज का समाज सेवकों का समाज में काम करने वाले लोगों, सामाजिक प्राणियों का दायित्व होता है। लेकिन देखने में आता है कि इस प्रकार की सेवा में लगे लोग भी धर्मांधता के मकड़ जाल में उलझकर उन्हीं कुरीतियों को निरंतरता बनाए रखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। इससे सचेत होना आवश्यक है। यदि इंसान होकर इंसानियत का धर्म नहीं निभाएंगे, तो यही ढकोसलेबाजी चलती रहेगी। वैसे सामाजिक रीति रिवाज में भी वैज्ञानिक आधारों पर विचार विमर्श का सतत प्रयास जरूरी है। और जो रीति रिवाज वैज्ञानिक आधारों पर खरे नहीं उतरते हैं, इन्हें त्याग देना होगा। असली मानव धर्म समझकर आगे बढ़ना होगा।

इंसान सक्षम बनाकर अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी उन्नत मार्ग पर पहुंचने में प्रयास कर सफलता प्राप्त कर सकता है। इसके उदाहरण पूरी वर्ण व्यवस्था में भरे पड़े हैं। इसलिए सामाजिक अधिकारों को पाने के लिए प्रत्येक इंसान को सजग होना होगा। वैज्ञानिक आधारों को अपनाना होगा। ऐसे महापुरुषों के संस्मरण, उनके बताएं मार्ग,उनके आदर्शों पर चिंतन करके प्रेरणा भी लेनी होगी। जैसे महात्मा बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले, ज्ञान ज्योति सावित्रीबाई फुले, दक्षिण भारत में सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों से सुसंपन्न बनाने का अभियान चलाने वाले महात्मा ई वी रामास्वामी पेरियार, संविधान रचयिता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर और इसी प्रकार अनेक समाज सुधार करने वाले महात्माओं, विद्वानों ने सामाजिक अधिकारों से इंसान को सुसंपन्न बनाने के लिए आदर्श स्थापित किया। इन्होंने उनके आदर्शों पर चलने वालों का जीवन का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। उन्हें समझ, विचार कर चलने का प्रयास प्रयास करें। दूसरों को भी प्रेरणा देकर मानव धर्म का पालन करने में सहयोगी बनें, जिससे कि सामाजिक अधिकारों से प्रत्येक मानव सुसंपन्न होकर सक्षम बन सके।

यदि इस पीढ़ी में यह संभव हो सका तो आने वाली पीढ़ियां कभी भी गुलामी के मकड़जाल में नहीं फंसने वाली होगी। नहीं तो हमेशा से समाज में जो चल रहा है वही चलता रहेगा। परिवर्तन नहीं करेंगे तो सुधार कैसे होगा। परिवर्तन ही सफल जीवन की कुंजी है।

करिए चिंतन करिए और समाज में व्याप्त कुरीतियों को स्वयं छोड़िए, दूसरों को छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करिए, समाज में जागरूकता फैलाकर समाज को शिक्षित कर उन्हें सक्षम बनाने के लिए परस्पर सहयोग करके क्षमतावान समाज बनाने का अभियान चलाते रहें। प्रत्येक मानव अंधविश्वास, छुआछूत, रूढ़िवाद, धर्मान्धता, अशिक्षा आदि व्याधियों से मुक्त होकर स्वच्छंद जीवन जीने और प्रसन्न रहकर, प्रसन्न रखने का अभियान चलाते रहे। यह उदाहरण प्रत्येक इंसान को प्रस्तुत करना होगा ताकि गुलामी के बंधन से मुक्त होकर सुशिक्षित समाज बन सके। प्रत्येक इंसान संपन्न, खुशहाल जीवन जिए। यही सामाजिक परिवर्तन का अधिकार प्राप्त करने का रास्ता हो सकता है।

अभी समाजों में आर्थिक और राजनीतिक अधिकार लेने की होड़ लगी हुई है। लेकिन उसके लिए ठोस प्रयास नहीं हो रहे हैं। जिन समाजों ने पीढ़ियों से प्रयास करके अधिकार संपन्न हो चुके हैं उनके उदाहरण ही समझ कर अपने समाज को आगे बढ़ाने का प्रयास कर सकते हैं। हमारी बुद्धि का भी उपयोग करते रहें। उदाहरण बनने लायक अपने परिवार और समाज के लिए कुछ करें।

आप सब जानते हैं कि अधिकतम समाज अशिक्षित,अर्ध शिक्षित रहने के कारण प्रगति के पथ पर आगे नहीं बढ़ पा रहा है। इसलिए आगे बढ़ें और बढ़ाने के लिए प्रयास जारी रखें। यह चिंतन करना जरूरी है। यदि इंसान ने सामाजिक अधिकारों को पाने के लिए रास्ता ढूंढ लिया हो तो, उसे कोई भी गुलाम बनाने की स्थिति में नहीं हो सकता। किसी में दम नहीं ऐसे व्यक्ति को गुलाम बनाकर धर्मांधता के मकड़ जाल में फंसा कर उसका दोहन करता रहे। उसकी संपन्नता उसकी आर्थिक स्थिति का दोहन करके ही नहीं, उसकी श्रम शक्ति और मानव शक्ति का भी दुरुपयोग करके मक्कड़ जाल में उलझाए रखकर अपना उल्लू सीधा करने का अभी तक अनुभव रहा है। उससे छुटकारा पाएं। इस पर विचार करें, चिंतन करें। उससे निकालने के लिए कुछ ना कुछ उपाय करें। यदि कर लिया तो आगे की पीढ़ी का भविष्य उज्जवल हो सकता है। भले ही हम पिछड़ गए हों लेकिन अब चिंतन तो कर सकते हैं और आगे बढ़ने का प्रयास कर सकते हैं। यह प्रयास करें कि आप यदि शिक्षित हैं तो सुशिक्षित होने के लिए महात्मा बुद्ध जैसे ऊपर उल्लेखित महापुरुषों की जीवनियां पढ़कर अपनाने का प्रयास करें। उन्होंने किन–किन मुसीबतों से सामना कर मानव समाज के लिए ऐसी स्थिति निर्माण कर दी है कि प्रत्येक इंसान स्वतंत्रता पूर्वक रहकर स्वतंत्रता से विचरण कर सके। अपना जीवन उन्नत बनाकर स्वयं उदाहरण बनने लायक अपने आप को निर्माण कर सके। करिए चिंतन करिए, कुछ करिए। शेष अगले चिंतन में विचार विमर्श करेंगे।

यदि आप सुशिक्षित हैं तो जरूर कुछ न कुछ सोचेंगे। चिंतन करेंगे और मानव समाज को उलझे हुए मकड़ जाल से निकलने में अपना जो भी संभव हो प्रयास करते रहेंगे।

जय ज्योति,
जय क्रांति

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तक महात्मा ज्योतिबा फुले के अंश। लेखक कन्हैयालाल चंचलरिक, (हंटर आयोग, 359) लेकिन वुड्स डिस्पैच से कई वर्ष पूर्व ज्योतिबा फुले अपने प्रयासों से महाराष्ट्र और विशेषतया पुणे में स्त्री शिक्षा की पहल कर चुके थे। अन्य प्रांतों में देशी स्कूल जिन्हें सरकार ने खोला था, चले नहीं। दलित शिक्षा पर किसी का भी ध्यान नहीं था। यह ज्योतिबा फुले ही थे जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से पुणे जैसे घोर धार्मिक कट्टरता के गढ़ में शिक्षा की गंगा बहा दी। ईसाई धर्म प्रचारकों के पीछे साम्राज्यवादी शासन बल था। धन और साधनों की कमी नहीं थी। सब प्रकार के मार्गदृष्टा थे, लेकिन ज्योतिबा तो इस अभियान में अकेले ही चले थे। निरंतर नशा छोड़ें।

पूर्व प्राध्यापक, कवि,
पत्रकार एवं समाजसेवी
भाई रामानुज सिंह 'सुन्दरम'
को 'शिक्षा ईशारा' समाचार पत्र का सह-सम्पादक बनाये जाने पर बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं
– विनय सैनी, दिल्ली

जय ज्योति! शिक्षा - समता - एकता - विश्वास जय क्रांति!!

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

R.No. S/466/SDM/NW/2011Dt. 29/07/11

शिक्षादान की अभिनव योजना

Jyoti Bhawan, 2718, Dr. Mukherjee Nagar, Near Sarvodya Vidyalaya, New Delhi - 110009
Contat : 9990952171 ● Website : phuleshikshansthan.org
Email : shikshaishara@gmail.com ● phuleshikshasansthan@gmail.com

President
Gangaram Gehlot
(Gujrat)
9825005723

Ex. President
Shankar Rao Linge
(Maharashtra)
09422068771

Vice President
Shripal Saini
(Delhi)
Shashi Saini
(Haryana)
N.L. Narendra Babu
(Karnataka)

General Secretary
Ramnarayan Chauhan
(Madhya Pradesh)
09990952171

Treasurer
Ram Lal Kachhawa
(Rajasthan)

Joint Secretary
Ad. Anubhav Chandel
(Rajasthan)
9829055875

Secretary
G.L. Saini
(Delhi)

Executive Members
S.B. Saini
(UP)
Sanjay Malakar
(Bihar)
Harish Patel
(Chhatishgarh)

आम सभा की सूचना

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि संस्थान की आम सभा दिनांक 21 जनवरी 2024 को अपराह्न 1.00 बजे रणकपुर सादड़ी रोड, देवड़ा फार्म हाऊस के पास, ग्राम सादड़ी, तहसील बाली, जिला पाली, राजस्थान में आयोजित की गई है।

आम सभा में निम्नलिखित प्रस्तावों पर विचार-विमर्श कर निर्णय लिये जायेंगे।

1. पिछली मीटिंग के लिए निर्णयों का अनुमोदन
2. महासचिव द्वारा गतिविधियों पर प्रतिवेदन
3. कोषाध्यक्ष द्वारा वर्ष 2022-23 की आय-व्यय का लेखा-जोखा का प्रतिवेदन
4. विधान/नियमावली में संशोधन, सुधार
5. संस्थान के पदाधिकारियों को आगामी 5 वर्ष के लिए नियुक्त करना
6. आगामी वर्ष का प्रस्तावित बजट
7. आगामी वर्ष के लिए चार्टर्ड अकाउंटेंट की नियुक्ति करना
8. संस्थान की आदर्श शिक्षा दान की अभिनय योजना प्रोजेक्ट एवं भूमि लेने के लिए विचार विमर्श
9. संस्थान द्वारा संचालित छात्रावास की व्यवस्था से संबंधित
10. संस्थान द्वारा प्रकाशित 'शिक्षा ईशारा' की प्रगति
11. अन्य प्रस्ताव जो सभा अध्यक्ष की अनुमति से प्रस्तावित हों

कृपया आयोजित आम सभा में अवश्य भाग लेकर सफल बनाएं।

दिनांक 24.12.2023 भवदीय

(रामनारायण चौहान)
महासचिव

प्रतिलिपि : श्रीमान रजिस्ट्रार महोदय, रजिस्ट्रार फर्म्स एवं सोसाइटी, कंझावला, दिल्ली की ओर सूचनार्थ

नोट : सम्पर्क- श्री गंगाराम गहलोत (राष्ट्रीय अध्यक्ष, मो. 9825005723) रणकपुर सादड़ी रोड आने के लिए रेल मार्ग से फालना जंक्शन से 25 किलोमीटर एवं एयरपोर्ट उदयपुर से 80 किलोमीटर की दूरी पर है। आस-पास अनेक दर्शनीय स्थल भी हैं। कृपया आम सभा में आपके आने की सूचना/जानकारी दिनांक 15 जनवरी 2024 तक देने की कृपा करें, जिससे कि फार्म हाऊस तक लाने एवं ठहरने आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जा सके।

R.N.I. No. DELBIL/2014/60339

सावित्री बा ज्योतिराव फुले ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा एकता प्रदर्शित

महात्मा फुले के कार्यों की एक झलक

– एक दौर था जब टाटा कंपनी से भी बड़ी कंपनी PCCC कंपनी थी, जिसका पूरा नाम पुणे कमर्शियल कंस्ट्रक्शन कंपनी था। इसके संस्थापक अध्यक्ष थे राष्ट्रपिता महात्मा ज्योतिबा फुले।

– महात्मा ज्योतिबा फुले समाज सुधारक, शिक्षक, दार्शनिक के अलावा उद्योगपति भी थे। उन्होंने अपने हुनर और दमखम पर उस समय भारत की सबसे बड़ी कंस्ट्रक्शन कंपनी खड़ी की। 1869 में कंपनी का सालाना टर्नओवर रु. 21,000/– (वर्तमान 21,000 करोड़) रुपये था। उस वक्त टाटा कंपनी का वार्षिक टर्नओवर 20,000 (वर्तमान 20,000 करोड़) रुपये था।

– उद्योगपति महात्मा ज्योतिबा फूले की कंपनी ने येरवडा पुल, येरवडा जेल और पुणे के नजदीक मुला–मुठा बांध का निर्माण कार्य किया।

– मुम्बई की पुरानी महानगरपालिका इमारत, परेल रेलवे वर्कशॉप और मुम्बई की अनेक इमारतें बनाई। कपड़ा मिलों के निर्माण कर मजदूरों की प्रथम ट्रेड यूनियन बनाने का श्रेय फुले की कंस्ट्रक्शन कंपनी को जाता है।

– बड़ोदा के महाराजा गायकवाड़ का आलीशान महल, राजविलास को भी बनाने का ठेका फुले जी की कंपनी को मिला था।

– फुले जी रिसर्च एंड डेवलपमेंट में अग्रणी थे। जब नदी, नालों का पानी रोककर बांध बनाना पाप माना जाता था। उन्होंने 200 बीघा जमीन लेकर नदी का पानी रोककर खेतों में सिंचाई अपने खेतों में कर, आधुनिकता से फल फूल सब्जी एंड कमर्शियल फसलें उगाकर किसानों को नई राह दिखाई।

– भारत में प्रथम ट्रेड यूनियन बनाकर मजदूरों को अधिकार दिलाए।

– महात्मा फुले बड़े दार्शनिक थे। साहित्य रचना में अग्रणी थे।उनकी लिखी पुस्तकों से ही प्रेरणा लेकर महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, आदि ने समाज कल्याण का मार्ग मजबूत किया। अंबेडकर ने संविधान में फुले जी के बताए मानव उत्थान के लिए मूलभूत प्रावधान किए।

– महात्मा फुले अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा समाज कल्याण कार्यों में खर्च करते थे। प्रथम बालिका स्कूल फिर 18 विद्यालय खोले। अस्पताल, दवाखाना और पुस्तक छापने का कारखाना बनाने में उनका बड़ा योगदान है।

– 1882 में बाल गंगाधर तिलक को एक मानहानि के मुकदमे में जेल जाने की नौबत आ गई। तिलक के पास जमानत के लिए पैसे नहीं थे। महात्मा ज्योतिबा फुले ने जमानत करवाई। फिर उनका सम्मान बढ़ाया। महात्मा ज्योतिबा फुले सही मायने में इस देश के युगपुरुष हैं।

अंतिम पंक्ति– उनका परिनिर्वाण होने के बाद उनकी कंपनी बंद हो गई। सत्यशोधक समाज संस्था के माध्यम से सावित्री बाई फुले ने समाज सेवा का उनका लक्ष्य पूरा किया।

युगपुरुष महात्मा ज्योतिबा फूले, ज्ञान ज्योति सावित्रीबाई फुले का योगदान मानव समाज कभी भुला नहीं पाएगा।

जय जोती जय क्रांति।

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान की स्थापना के बाद भारत के ऊर्जा मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे से पदाधिकारियों की भेंट

Printed Matter, Book Post

To,

.....

.....

.....

.....

If not delivered, please return to:

"SHIKSHA ISHARA"

Jyoti Bhawan, 2718, Opp. HDFC Bank, Main Road,
Dr. Mukherjee Nagar,Delhi-110009
Mob.: 9990952171

प्रार्थना

प्रभु तुने अंतरिक्ष में अनंत, अनगिनत सूर्यमंडल बनाकर, इस पृथ्वी पर, प्राणी भी बनाये और तुने मुझे भी इंसान बनाकर, मुझमें विवेकशील बुद्धि दी, उससे मैंने तेरी आज्ञा के अनुसार, सत्य का नित स्मरण कर, व्यवहार किया, यह तू जानता है।

इसलिए हे प्रभु! तू मुझे स्वीकार करेगा, ऐसा मुझे पक्का विश्वास है और इस तरह से जो बाकी सब मानव भाई-बहन सच्चे आचरण से व्यवहार करेंगे, उनको भी तू नि:संदेह स्वीकार करेगा। तेरी सत्य सत्ता निरंतर बढ़ती ही रहे। (महात्मा फुले पू.स. 520 महाराष्ट्र सरकार का प्रकाशन)

श्रीपाल सैनी बने सावित्रीबा ज्योतिराव फुले ट्रस्ट के अध्यक्ष

दिल्ली। सावित्रीबा ज्योतिराव फुले ट्रस्ट के हुए चुनाव में महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण के उपाध्यक्ष श्री श्रीपाल सैनी अध्यक्ष, आजाद सिंह सैनी महामंत्री एवं अर्जुन सिंह सैनी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

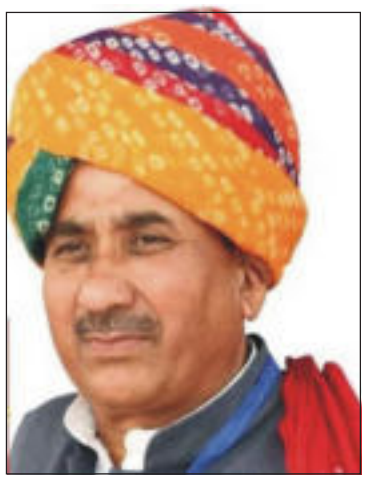

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष गंगाराम गहलोत, पूर्व अध्यक्ष शंकरराव लिंगे, कोषाध्यक्ष रामलाल कच्छावा, महासचिव राम नारायण चौहान, संयुक्त सचिव एडवोकेट अनुभव चंदेल, सदस्य ग्यारसीलाल सैनी, आरपी सैनी पदाधिकरीगण, सदस्यों ने श्रीपाल सैनी उनकी टीम को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि उनकी टीम निर्माणाधीन सैनी भवन को द्रुत गति से पूरा करेगी, जिससे कि देशभर के दिल्ली में छात्रों के लिए छात्रावास तथा समाजजनों के लिए रहने की व्यवस्था हो सके।

श्री योगेश सैनी (आईएएस)

बधाई एवं शुभकामनाएं

समाज गौरव आईएएस योगेश जी सैनी को अपना होम कैडर हरियाणा मिला।

सिर से पिता का साया उठने के बाद माता जी और दादी जी के सहयोग और आशीर्वाद से गौरव सैनी ने 323वीं रैंक हासिल की।

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान की ओर से गौरव सैनी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

'शिक्षा ईशारा' के संस्थापक श्री गंगाराम गहलोत (अध्यक्ष), श्री शंकरराव लिंगे (पूर्व अध्यक्ष), रामनारायण चौहान (महासचिव), रामलाल कच्छावा (कोषाध्यक्ष) महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान, दिल्ली

स्वामी 'महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान', मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रामनारायण चौहान द्वारा एजीएस पब्लिकेशन, डी-67, सैक्टर 67, नोएडा-201301, उत्तर प्रदेश से मुद्रित तथा ऑफिस जी-9, हर्ष कॉम्पलेक्स, एलएससी, गाजीपुर, दिल्ली-110096 सेप्रकाशित किया। सम्पादक : रामनारायण चौहान मो. 9990952171, सह-सम्पादक- रामानुज सिंह 'सुन्दरम', मो. 9811303508, टेलीफैक्स- 011-45062626

समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा। पत्र में प्रकाशित सामग्री से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

R.N.I. No. DELBIL/2014/60339

आजीवन सदस्यता : रु. 1000/-